कुल मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 3

MHD–23

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम. ए. हिन्दी)

(एम. एच. डी.)

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर, 2024

एम.एच.डी.–23 : मध्यकालीन कविता-1

समय : 2 घण्टे *अधिकतम अंक : 50*

***नोट : प्रथम** प्रश्न अनिवार्य है। शेष में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

1. निम्नलिखित पद्यांशों में से किन्हीं **दो** की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 2×10=20

(क) वह साँवरों नंद को छैल अली अब तो अति ही इतरान लग्यौ।
नित घाटन वाटन कुंजन में मोहिं देषत ही नियरान लग्यौ॥
रसखान बखान कहा कहिए तकि सैननि सयो मुसकान लग्यौ।
तिरछौ बरछी सम मारत है दृग वान कमान सु कान लग्यौ॥

(ख) हँस गँवन ठुम ठुमकत आवइ। चमक-चमक धनि पाउ उचावइ॥
झनक-झकक पौ धरती धरा, चमक-चमक जनु सुगति भरा॥

Downloaded from www.IGNOUBABA.com

सेल मल्हान सों चाँदा आवइ। जानों कीनरि बेगु उचावइ॥

सुर भुईं धरउँ चाँद धरि पाऊ। नान हुतैं त काढ़ेऊँ गाऊ॥

पागै धूर नैन भरि आँजौ। जीभ काढ़ि दुई तरुवा माँजौं॥

चलत चाँद चित लागा, मनहुत उतर न काउ॥

पाँपहि हाथ न पहुँचे, हँस-हँस रोवइ राउ॥

(ग) रविदास उपजइ सभ इक नूर तें, ब्राह्मन मुल्ला सेष।

सबको करता एक है, सभ कूँ एक ही पेट॥

(घ) बूझत स्याम कौन तू गोरी।

कहाँ रहति, काकी है बेटी, देषी तहीं कहूँ ब्रज खोरी॥

काहे कौं हम ब्रज-तन आवतिं, खेलति रहतिं आपनी पौरी॥

सुनत रहतिं स्रवननि नँद-ढोटा, करत फिरत माखन-दधि चोरी॥

तुम्हरौ कहा चोरि हम लैहैं, खेलन चलौं संग मिलि जोरी॥

सूरदास प्रभु रसिक-सिरोमनि, बातनि भुरइ राधिका भोरी॥

2. भक्तिकाल के सन्दर्भ में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की मान्यताओं का विश्लेषण कीजिए। 10

3. 'चंदायन' के प्रमुख नारी पात्रों की विशेषताएँ बताइए। 10

Downloaded from www.IGNOUBABA.com

4. निर्गुण काव्य में रविदास का स्थान निर्धारित कीजिए। 10

5. भक्त कवि के रूप में सूरदास का मूल्यांकन कीजिए। 10

6. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए :

$2 \times 5 = 10$

(क) उलटबाँसी

(ख) अपभ्रंश साहित्य में कृष्ण काव्य

(ग) सुरति-निरति

(घ) षट्चक्र एवं नाड़िया

× × × × × × ×

Downloaded from www.IGNOUBABA.com